



શ્રી શત્રુંજય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસકુમ

C/O. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંટા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૭ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન વિશારદ

Answer Sheet

◆◆ અભ્યાસકુમ જવાબ પત્ર ◆◆ 2020-21

એનરોલમેન્ટ નંબર -

1

ગામ -

1. 2

વિદ્યાર્થીનું નામ

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

- (૧) આત્મ-સમાધિ
- (૨) મોહૃદ્ય
- (૩) યંપાનગરી મા
- (૪) ભ્રમ્ય
- (૫) ઓડકાર
- (૬) પાપમય
- (૭) લેન ધર્મ
- (૮) પ્રભાવસ્વામી
- (૯) રાગ અને હેઠ
- (૧૦) ગૌપરી
- (૧૧) ખંચરમુદ્દુ / અશુદ્ધારો
- (૧૨) શુદ્ધજ્ઞાન
- (૧૩) અનલિંગાદ્વિક
- (૧૪) સાંદ્રિકાપી
- (૧૫) અનંતા
- (૧૬) દુર્યોગભિત્તિ
- (૧૭) શ્રીકૃષ્ણભદ્રત સેઠ
- (૧૮) ધર્મ-અધર્મ ને
- (૧૯) વર્તમાન જ્ઞાની
- (૨૦) પ્રીમદરતનીભરસુ

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

- (૧) દુષ્ટો નું
- (૨) શ્રીકાચ્છ્વામદાસુર
- (૩) અનેકાંત નો
- (૪) મારી અર્થ નો
- (૫) મરુદ્વા માતાએ
- (૬) પ્રમત્ર સંયાલ
- (૭) પા-શ્વરીનાય
- (૮) પ્રિણેરીર અર્ગાવિલી બિનમસ્કોર / માનિલાં
- (૯) અમલુલ નું
- (૧૦) જગતસુરી ની
- (૧૧) આનંદ મા
- (૧૨) કંદક છે
- (૧૩) માટથી ગુરુસન સંસાર વિદ્ધાની
- (૧૪) ગ્રંથિલોદચી
- (૧૫) સુધમારવામી ની

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

- (૧) કંદા ને
- (૨) સંક્રિયા
- (૩) દારુ
- (૪) નાર્કો / નાર્કો

પ્રશ્ન-૪ જોડાં જોડા

| | | | | | | | | |
|------|----|-----|---|------|---|------|----|----|
| (૧) | 6 | (૪) | 5 | (૧) | ✓ | (૧) | 21 | 29 |
| (૨) | 1 | (૫) | 4 | (૨) | ✓ | (૨) | 6 | 6 |
| (૩) | 10 | (૬) | 8 | (૩) | ✓ | (૩) | 15 | 95 |
| (૪) | 9 | (૭) | 7 | (૪) | ✗ | (૪) | 7 | 6 |
| (૫) | 2 | (૮) | 3 | (૫) | ✗ | (૫) | 2 | 2 |
| (૬) | 19 | | | (૬) | ✓ | (૬) | 19 | 98 |
| (૭) | X | | | (૭) | X | (૭) | 10 | 90 |
| (૮) | X | | | (૮) | X | (૮) | 18 | 98 |
| (૯) | ✓ | | | (૯) | ✓ | (૯) | 12 | 92 |
| (૧૦) | X | | | (૧૦) | X | (૧૦) | 22 | 22 |

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ = કુલ ગુણ.

શીખાઈ

તપ્યાસનપરની જરૂરી

१. साधु छ छारणी ची ज्ञ आहार करे छे. अन्यथा साधु आहार न करे. एसे आहार परावर्धावाची थोडो-थोडो लर्डी ने लुवन निवाहि करेछे. नहीं तो वधारे ब्रत-परम्पराभाव मांज लुवन व्याप्तित थेय छे. छ-छारणी-पा संयम निवाहि माटे आहार करे. (३) लुधा वेदना ने (पूर्णने) शांत झरवा माटे. (५) ईर्याशमिति ना शुद्ध पालनार्थे करे. (६) लुव रुहा झरवा माटे करे. (७) धर्म-ध्यान अथवा शुभ ध्यान मां स्थिरता ज्ञानवाचा माटे करे. (८) वडीलो नो विनय झरवा तथा एमनी वैयाकृत झरवा माटे साधु आहार करे छे.

२. लुधेप-लुगुरु अनेकुर्मने विषे ने देव-गुरु-धर्म नी लुष्यहोवी ते व्यक्त मिथ्यात्वाचे. एवी लुष्यहोवी रंडी पंचेन्द्रियने ज्ञ होय छे. अव्यक्त मिथ्यात्व मोहुणी छेंटले अज्ञान लुख छे. मिथ्यात्व नां प्राचारपां (१) अलिम्गहिंड मि. - परंपराधी व्याख्या रावता धर्म ने ज्ञ साधुं मानवं ते (२) अनभिग्रहिंड मि. - व्याप्ती ज्ञानाचे अव्यक्त मिथ्यात्व मोहुणी छेंटले अज्ञान लुख छे. मिथ्यात्व नां प्राचारपां (३) अलिम्गहिंड मि. - अस्पत्त यांच्या रावता धर्म ने ज्ञ साधुं मानवं ते (४) अनभिग्रहिंड मि. - व्याप्ती ज्ञानाचे अव्यक्त मिथ्यात्व मोहुणी छेंटले अज्ञान लुख छे. (५) अलिम्गलिवेशिंड मि. - हुंके डुंडुं दुंडुं उमने जे इये छे) ते ज्ञ साधुं सायो. एवी लुष्यहोवी ले. (६) सांकायिंड मि. - वस्तुओं नुं स्वरूप जे रीते उल्लुं छे. तेन रीते हुरो हे जीणुर्व इशोऽ एवी शंका ले. (७) अनासोजिंड मि. - अस्पत्त येतन्यवाणा असंज्ञी लुवोंने जे मिथ्यात्व मोहुणी नों उद्य ले. आमांधी प्रथम यार व्यक्त मिथ्यात्व छे. ज्यारे छेसुं अव्यक्त मिथ्यात्व छे.

३. उर्मो विगेरि ना झारणे लुवो हुणी याय-हुंडय ते हुंडक उहेवाय छे. लुवोना पकुड लेलो नो विविध गति-ज्ञति ना दुपो झरी हंडावुं पडे छे. छयारेष जनुक्कमे निरोह मां, स्थावर अंडेन्द्रियमां विडेन्द्रिय मां, गर्भज्ञ तिर्यंग मां, नरक-गति मां, देव गति मां अने मनुष्य गति लुख हुणी च्यावं हंडाय छे. गति नी अपेक्षाये विश्वार झरतां- नारकीनो-पुंडक, तिर्यंग ना- हुंडक-पृथ्वीकाय रस्थावर ना- प+ विडेन्द्रिय ना- नुंगर्भज्ञ तिर्यंग नो- १ = ८). मनुष्य नो-पुंडक अने देवना- (असुरादि भवनपति ना- १० + व्यंतर नो- १ + ज्योतिषीनो- १ + वैमानिक्कनो- प = १३) एवी रीते य गति ना घोवीस हुंडक याय छे. १ + ८ + १ + १३ = २४ हुंडक याय छे.

४. लंबुकुमार ना लज्जन आठ उन्याजो साचे ध्येला छे. ज्यां हरोजे नी नहीं अलग्ने नी संपत्ति अल्याजो ओगनी प्रार्थना करी रही छे. अने आप्तेष पुन त्यग वैराग्य नी वातो करी रक्क्यो छे. योरी कर आवेलो प्रभवकुमार त्यां पहोची भीति ने डान रुडाजी अंदर मां धती वैराग्य नी वातो कुने अद्वादा प्रभवकुमार ने उट्ठो लाग्यो, मोहुनिद्रा मांधी गेनो रुदाता लगी गयो. त्यारे प्रभव परा गंगुमुमा पासे पडोची गयो, एमना गरेलो मां पड्यो. अने डहे छे-तमां योपन गाने लुवन शहज छे. हुंदो दुंहुं तमारा घरे न्योरी योरी डरी ने ल्याज्जी योरी न डरवी पडे येमु विवारलो हुलो. तमारी वाणीसांभ तमारी वैराग्य भूरज्जी लाई योरी मांडुं दृद्य राहु लुवन योरी लीद्य इ. योरी पर रुदान नी मारी योरी अंतिम अनी रहेता. हुं परा आपनी सार्थी दीजा लुधी. एन ज्ञेनु भवत्व छे.

५. जे पुरुषो श्री पार्थिनाथ प्रमु ना यरहा-युगल ने हुमेंदा नमे छे. तेजो वाढारा पवन ची झोप्प पामेला समुद्र ना उत्र लरंगो ना भयंडर राखोवाणा अने संभ्रम-उत्तंग थी भय वडे विहृवण जेवेला अलाजीज्ज्ञेये जेमां पोतानो व्यापार मुही दीघो छे. तेमां परा एना वहारा ने अंजिंडिल राष्ट्र रुद्धेला डांडाने रुद्धावार मां प्राप्त करे छे. माटे जे पुरुषो ची पार्थिनाथ प्रमु ना यरहा-युगल